जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५९ अंक - ०९
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

भाद्र-आश्विन : सम्वत् २०७४ वि०   सितम्बर – २०१७

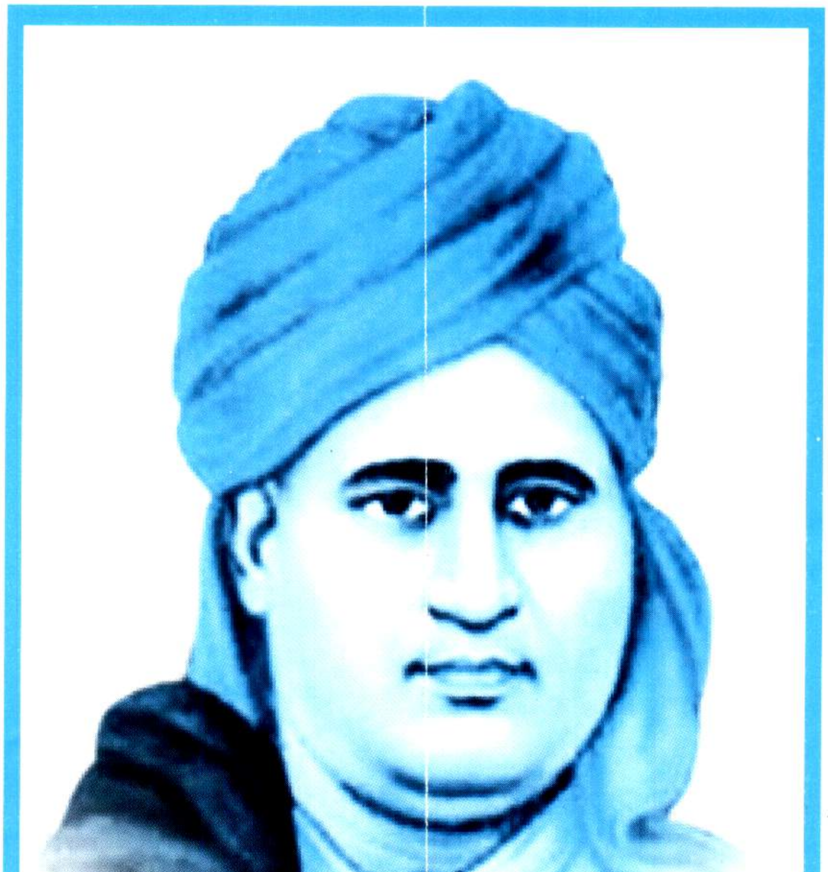

स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

अर्न्तविद्यालय देशभक्ति गीत प्रतियोगिता

आर्य समाज कलकत्ता (युवा शाखा) द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में रविवार दिनांक २० अगस्त २०१७ को आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में प्रातः १० बजे अर्न्तविद्यालय देशभक्ति गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कोलकाता के प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्र-छात्राएं देशभक्ति पर आधारित गीतों के गायन और प्रस्तुति हेतु उपस्थित हुए। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्धारण करने के लिए संगीत की विद्या में पारंगत तीन निर्णायकों का एक निर्णायक मण्डल था जिसके निर्णयानुसार निम्न छात्र-चात्राओं ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान अर्जित किया।

प्रथम — श्रेष्ठा चटर्जी (११वीं कक्षा) अशोका हाल गर्ल्स स्कूल।

द्वितीय — ऋतिका उपाध्याय (११वीं कक्षा) माहेश्वरी बालिका विद्यालय।

तृतीय — शुभम उपाध्याय (११वीं कक्षा) श्री माहेश्वरी विद्यालय।

प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान अर्जित करने वाले प्रतियोगियों को विशिष्ट पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त समस्त प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतियोगियों के आयोजन का उद्देश्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में देशभक्ति की भावना को जागृत करना तथा देश के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराना है। इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन का यह ३१वां वर्ष है। इस कार्यक्रम के संयोजक थे श्री रंजीत झा। कार्यक्रम को कुशलता पूर्वक संचालित किया। श्री अशोक सिंह जी ने। राष्ट्रगान के गायन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्यसमाज कलकत्ता के सभागार में श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह ७ अगस्त से १४ अगस्त २०१७ पर्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ९.३० बजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य पं० देशराज जी सतेच्छु (भरतपुर-राजस्थान) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। ऋत्विजगण के रूप में वेदपाठ कर रहे थे पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० नचिकेता भट्टाचार्य, पं० देवनारायण तिवारी, पं० वेदप्रकाश शास्त्री, पं० कृष्णदेव मिश्र, पं० योगेशराज उपाध्याय एवं पंडिता अर्चना शास्त्री। प्रथम दिन श्रावणी पर्व के अवसर पर यज्ञ पर उपस्थित समस्त आर्य जनों ने नवीन यज्ञोपवीत धारण किया। सायंकाल प्रतिदिन ७ बजे से ७.३० बजे तक यज्ञ, ७.३० बजे से ८ बजे तक पं० अपूर्व देवशर्मा जी द्वारा भजन एवं ८ बजे से ८.४५ बजे तक आचार्य पं० देशराज जी 'सतेच्छु' द्वारा वेद कथा के अन्तर्गत व्याख्यान एवं प्रवचन आयोजित हुआ। १४ अगस्त २०१७ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सायंकाल ७ बजे से ९ बजे तक आर्यसमाज कलकत्ता के सभागार में मनाया गया जिसमें पं० अपूर्व देवशर्मा जी द्वारा भजन, पं० देवनारायण

(शेष पृष्ठ २८ पर)

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५९ अंक — ०९
भाद्र-आश्विन २०७४ वि०
दयानन्दाब्द १९३
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८
सितम्बर — २०१७

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

•

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

•

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. तीन वर (५५)		४
४. स्वामी जी का स्वकथित जीवन-चरित्र	पं. लेखराम द्वारा संकलित	८
५. सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा (महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का काव्यानुवाद)	पं. देवनारायण तिवारी	१०
६. "भीष्म पितामह ने किया राजाओं के लिए चौतीस गुणों का वर्णन"	श्री खुशहाल चन्द्र आर्य	१२
७. ऋत सत्य और सत्य का रहस्य	पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'	१४
८. हमारा स्वाधीनता पर्व (१५ अगस्त एवं २६ जनवरी)	श्री चांदरतन दमानी	१७
९. "ऋषि दयानन्दस्य वेदभाष्यं — संस्कृत साहित्याय वरदानम्"	पं० सत्यवीर शास्त्री	२०
१०. वेद में ईश्वर का स्वरूप	श्री कामता प्रसाद मिश्र	२४

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६

दूरभाष : २२४१-३४३९ ***email : aryasamajkolkata@gmail.com***

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा।

५५

तीन वर

सत्येनावृता, श्रिया प्रावृता, यशसा परिवृता ।

अथर्व १२-५-२ .

शब्दार्थ :-

सत्येन	= सत्य के द्वारा	आवृता	= घिरा हुआ
श्रिया	= श्री, लक्ष्मी के द्वारा	प्रावृताः	= प्रकृष्टता से आच्छादित
यशसा	= यश के द्वारा	परीवृता	= चारों ओर से भरपूर

भावार्थ :-हे प्रभो ! हमारा जीवन सत्य से घिरा रहे । श्री, आश्रय भाव और लक्ष्मी इसे आच्छादित रखें । चारों ओर से यह यश से भरपूर बना रहे ।

विचार विन्दु :

१. सत्य की महिमा ।

२. सत्य से आवृत का भाव ।

३. सत्य, यश, श्री एवं वर्ण धर्म ।

४. वर पात्र को ही मिलता है ।

व्याख्या

कहा जाता है कि जब देवता प्रसन्न होते हैं तो अपने भक्त को वर देते हैं । भक्त अपनी आवश्यकता, कामना के अनुसार वर मांगते हैं । कोई पुत्र, कोई धन-सम्पत्ति, कोई विद्या बुद्धि, आदि अपना-अपना अभीष्ट वर में मांगते हैं ।

प्रस्तुत मंत्र में परमेश्वर से तीन वर मांगे गये हैं । वर मांगने के लिए वर मांगने का पात्र बनना पड़ता है । जब परमेश्वर किसी को वर पाने का सुपात्र समझते हैं तो उसे बिना मांगे ही वर दे देते हैं । वर तो हमें गुरुजनों से, महापुरुषों से और परमेश्वर से, सभी से मिलते हैं । प्रथम हम अपने जीवन से, आचरण से वर पाने की पात्रता सिद्ध कर दें तो वरदाता तो वर देने के लिए तैयार बैठे रहते हैं । वर प्राप्ति की एक कथा 'कठोपनिषद्' में आती है। नचिकेता नामक एक ब्राह्मण वटु अपने पिता के आंदेश का पालन करने के लिए आचार्य यम के घर जाता है । संयोग से आचार्य घर पर नहीं थे । नचिकेता ने बिना आचार्य को प्रणाम किये कुछ खाने-पीने से इन्कार कर दिया । तीन दिन बाद जब आचार्य जी आये और सुना कि यह ब्राह्मण वटु तीन दिन से बिना अन्न-जल ग्रहण किये हमारी प्रतीक्षा में बैठा है । तो आचार्य ने उसकी सुपात्रता

देखी और उसे तीन वर दान कर दिया । वर सुपात्र को ही मिलता हैं, अयोग्य कुपात्र को नहीं।

प्रस्तुत मंत्र में पहला व्रत है सत्येनावृता कि हे प्रभु ! हमारा जीवन चारों ओर से सत्य से आवृत्त घिरा हुआ रहे । सब ओर से आवृत्त रहने का अर्थ है कि हमारा जीवन मनसा, वाचा, कर्मणा सत्य से घिरा हुआ हो । न हमारे मन में असत्य का वास हो, न हमारी वाणी में असत्य का निवास हो, न हमारे कर्म में असत्य कभी आने पावें । अब एक प्रश्न होता हैं कि सत्य है क्या ? साधारण मनुष्य सोचता है कि सत्य माने सच्चाई । सत्य मानें सच्चाई भी होता है, किन्तु सत्य का अर्थ बड़ा व्यापक है । भगवान कृष्ण के शब्दों में 'सद्भावे, साधु भावे च' और 'प्रशस्ते कर्मणि' सत् शब्द का प्रयोग होता है । मन, वचन, कर्म में 'सत्य' हो । मन, वचन, कर्म में 'साधुता' हो और हमारा मनन, वचन, कर्म सब प्रशस्त - प्रशंसनीय हों, तो हमारा जीवन सत्य से घिरा हुआ है । कहा गया है —

'नहि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम् ।'

सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और असत्य, अनृत, अनुचित से बढ़कर संसार में कोई पाप नहीं है ।

मंत्र में दूसरा वर मांगा गया है कि हमारा जीवन श्रिया प्रावृता 'श्री' से प्रावृत्त-प्रकृष्टता के साथ ढंका हुआ हो । साधारण भाषा में श्री का अर्थ धन सम्पत्ति या शोभा समझा जाता है किन्तु गहराई से देखा जाये तो 'श्री' में आश्रय का भाव छिपा हुआ है। जिसके धन में उचित पात्रों को प्रश्रय नहीं मिलता, न विद्यार्थी को सहायता, न अनाथ का पालन-पोषण, न रोगी को औषध, उस धन को कोई धन तो कह ले, लक्ष्मी कह लें किन्तु वह 'श्री' नहीं हैं । थोड़ा ही हो, किन्तु जिन्हें आवश्यकता है, उन्हें सहायता मिलती रहे तो ऐसा धन 'श्री' है । और चाहे धन थोड़ा ही हो किन्तु यह धन धन्य हैं । रहीम ने कितना सुन्दर कहा हैं —

'धन रहीम जल बावड़ी, लघु जिय पियत अघाय ।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय ।।'

ताल, तलैया बावड़ी में थोड़ा पानी होता है, पर वह धन्य है उसे पीकर पशु, पक्षी, मनुष्य सभी जीते हैं । समुद्र का अपार जल व्यर्थ है, वह किसी के काम नहीं आता ।

एक बात और ध्यान रखने की है कि कभी आश्रय देने वाले का धन, उसकी 'श्री' घटती नहीं हैं । रहीम ने कहा है —

'रहिमन पंछी के पिये घटै न सरिता नीर ।
धर्म कियै धन न घटै जो सहाय रघुवीर ।।'

अतः हमारे जीवन में, हमारी सम्पत्ति से, हमारे शरीर से, हमारी विद्या-बुद्धि से लोगों को यदि आश्रय मिलता रहे तो हमारी 'श्री' की वास्तविक सार्थकता है ।

मंत्र में तीसरा वर मांगा गया हैं कि हमारा जीवन यशसा परिवृता, यशस्वी हो । हमारे जीवन में चारों ओर से यश घिरा रहे । सत्य बात यह हैं कि जिसके जीवन में सत्य है, श्री है उसका जीवन यशस्वी होता ही है और सत्य की जगह झूठ आया और धर्म की जगह स्वार्थ आया तो जीवन बदनाम हो जाता हैं । जीवन में यश नहीं रह जाता । जिसके जीवन से यश चला गया उसका जीवन नरक हो जाता हैं । एक सूक्ति हैं —

'अकीर्तिरेव नरको नान्योऽस्ति नरकोदिवि ।'

अर्थात् इस संसार में अकीर्ति, बदनामी से बढ़कर और कोई अन्य नरक नहीं हैं । रावण, धृतराष्ट्र, दुर्योधन इत्यादि के जीवन में अकीर्ति ही तो आई । वस्तुतः सत्य, श्री और यश ये तीनों ही हमारे जीवन की सफलता के तीन स्तम्भ हैं । इन्हीं पर हमारा जीवन, हमारे जीवन की प्रतिष्ठा टिकती है ।

सत्य - यश एवं श्री तथा तीनों वर्ण :-

सामान्य रूप से सम्मानपूर्वक जीवन यापन करने के लिए सत्य, यश और श्री सभी मनुष्यों के लिए जरूरी है । किन्तु ब्राह्मण विद्या का रक्षक और प्रचारक होता है । उसके लिए यश और श्री उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं जितना सत्य । वस्तुतः सारे बौद्धिक कार्य अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान, ज्ञान, विज्ञान, साहित्य दर्शन, भौतिकी, रसायन, भूगोल, खगोल विद्या की अनेकों शाखाओं में सत्य के साथ समझौता नहीं किया जा सकता। वास्तविकता को, यथार्थ को छोड़कर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता । अतः विद्या के क्षेत्र में काम करने वालों को सच्चाई, सत्य, वास्तविकता का पालन परम आवश्यक है । वास्तविकता तो यह है कि विद्या के क्षेत्र में काम करने वालों का यश और उनकी श्री भी उनके इसी सत्यापन पर निर्भर करते हैं। महाभारत में एक स्थल पर कहा भी गया है -

'नहि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं विशिष्यते'

अर्थात् सत्य की रक्षा से बढ़कर विद्या के लिए और कुछ नहीं है । इसीलिए सत्य की विशेषता है ।

हम यह बहुत सुस्पष्ट कहना चाहते हैं कि सत्य, यश और श्री, सभी के लिए बहुत आवश्यक है । किन्तु जैसे ब्राह्मण सत्य की रक्षा के लिए यश और श्री को दांव पर लगा देता है, (भले ही ब्राह्मण का यश और श्री सत्य की रक्षा में ही निहित है) वैसे ही क्षत्रिय यश की रक्षा के लिए सत्य और श्री के साथ समझौता कर सकता है । क्षत्रिय हमारी संस्कृति का एक पारिभाषिक पवित्र शब्द है । क्षत्रिय का अर्थ है क्षतात् त्रायते असौ क्षत्रियः'जो क्षत से, घाव से, हानि से या कष्ट से प्रजा की रक्षा करे वह क्षत्रिय है। क्षत्रिय का प्रथम कर्त्तव्य ही बताया गया है 'प्रजानां रक्षणम्' अर्थात् प्रजा की रक्षा । आज की भाषा में शासक, सेना, पुलिस विभाग, सभी क्षत्रिय वर्ग में सम्मिलित माने जायेंगे । इस वर्ग के लिए यदि कभी सत्य से समझौता करने की

आवश्यकता पड़े, तो देश, राष्ट्र और प्रजा की रक्षा के लिए तत्कालीन रूप से असत्य की सहायता ले लेने से परम सत्य की रक्षा होती है । क्योंकि राजधर्म का परम सत्य है देश, राष्ट्र और प्रजा की रक्षा । यही राजधर्म का यश है । सेना का पराजित होना, राज्य-व्यवस्था का असफल होना परम अपयश है । एक नीति - वचन है -

'व्रजन्ति ते मूढ़धियः पराभवम्,
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः ।'

अर्थात् जो मूढ़ बुद्धि के लोग मायावी धूर्तों के साथ माया के साथ व्यवहार नहीं करते उन्हें पराजय ही मिलती है । अतः दुष्टों को दुष्टता से ही, हिंसक को प्रतिहिंसा से ही उत्तर देना राजधर्म है ।

कोई ५० वर्ष पूर्व की घटना है । उस समय व्यवसायियों का राज काज में इतना अधिक प्रवेश नहीं था जितना आज है । खाद्यान्न के व्यवसायियों ने बड़े कृत्रिम रूप से जमाखोरी का सहारा लेकर खाद्यान्न की बाजार में आपूर्ति कम कर दी और खाद्यान्न के दाम, स्वाभाविक ही बढ़ने लगे । खाद्य मंत्री ने इस परिस्थिति का भली प्रकार आकलन कर लिया और एक महत्वपूर्ण प्रेस कान्फ्रेन्स में झूठी घोषणा कर दी कि हमने विदेशों से हजारों टन खाद्यान्न मंगाया है और यह आयात का खाद्यान्न सप्ताह के भीतर ही पहुंच जायेगा और बाजार में खाद्यान्न की आपूर्ति ठीक सुलभ हो जायेगी । इस घोषणा का जमाखोर व्यवसायियों पर जादू का सा असर हुआ और दूसरे ही तीसरे दिन से बाजार में खाद्यान्न की कमी न रह गयी । खाद्य मंत्री की घोषणा सर्वथा झूठी थी किन्तु व्यवसायियों की चालाकी का यह उचित उत्तर था । झूठ के सहारे परम सत्य की रक्षा हो गयी ।

वैश्य वर्ग के लिए श्री, धन, सम्पत्ति, उत्पादन, सब कुछ आवश्यक है । कृषि, पशुपालन, व्यवसाय, उद्योग परिवहन सभी कुछ वैश्य वर्ग के कार्य हैं । उनकी वृद्धि, सुव्यवस्थित संचालन, व्यक्ति और राष्ट्र, सबके लिए आवश्यक है ।

श्री में आश्रय का भाव निहित है । उसी धन-सम्पत्ति का महत्व है, उसी धन सम्पत्ति में सत्य और यश बसता है जिसमें आश्रय का भाव निहित रहता है । वे धनवान् परम सौभाग्यशाली हैं जो आवश्यकता पड़ने पर अपनी तिजोरियां खोल देते हैं । अकाल, भूचाल, महामारी, प्राकृतिक विपदाओं के समय या सैनिक संकट के समय जो अपना धन न्यौछावर कर देते हैं वे धन्य हैं। वास्तव में वे ही श्रीमान् हैं । धनपति शिरोमणि भामाशाह महाराणा प्रताप को अपना धन राष्ट्रीय संकट के समय देकर इतिहास में अमर हो गया । यही है वास्तविक श्री ।

इसी भाव से आचमन के तीसरे मंत्र में कहा गया है -

'सत्यं यशः श्रीः मयि श्रीः श्रयतां'

अर्थात् सत्य, यश और श्री हममें शोभा के साथ विराजें ।

--o--

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय–१

पुष्कर के मेले का वृत्तान्त

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में सम्वत् १८८१ में हुआ था । पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

अजमेर में प्रथम वार

द्वितीय ज्येष्ठ संवत् १९२३ (३० मई, सन् १८६६) के लगते ही स्वामी जी पुष्कर से अजमेर में आये और बंसीलाल सरिश्तेदार के बाग में ठहरे । उस समय कुल छः मनुष्य थे । स्वामी जी ने जोशी रामरूप और पंडित शिवनारायण के द्वारा नगर के मार्गों पर विज्ञापन लगवाये कि जिस किसी को मूर्तिपूजा आदि पर सन्देह हो वह हमसे आकर शास्त्रार्थ कर ले । पंडित बुद्धिचन्द्र व छगनलाल शास्त्री किशनगंढ़ निवासी उन दिनों अजमेर में रहते थे । शास्त्री जी ने स्वामी जी से कुछ व्याकरण के प्रश्न सीखे और कुछ महाभाष्य पढ़ा । उनके व्यय आदि का प्रबन्ध सेठ किशनचन्द जी करते थे ।

इस बार कई मनुष्यों से प्रश्नोत्तर होते रहे । प्रथम अजमेर के पंडितों से शास्त्रार्थ की ठहरी तब स्वामी जी ने व्यंकट शास्त्री को कहला भेजा कि हम शास्त्रार्थ करने वाले हैं । हम तुम को अपनी ओर से मध्यस्थ करेंगे, आपको आना होगा । उसने उत्तर में कहला भेजा कि आप शास्त्रार्थ की तिथि से दो तीन दिन पूर्व मुझे कहला भेजें, मैं अवश्य आऊँगा परन्तु यह शास्त्रार्थ नहीं हुआ इसलिए उसको नहीं बुलाया गया ।

पादरियों से मित्रतापूर्ण शास्त्रार्थ – फिर स्वामी जी का मित्रतापूर्ण शास्त्रार्थ पादरी लोगों से हुआ। एक तो रेवरेंड जे ग्रे साहब मिशनरी प्रेजबिटेरियन मिशन अजमेर थे और दूसरे पादरी राबिन्सन साहब थे और तीसरे शूलब्रेड साहब पादरी मेरवाड़ अर्थात् व्यावर थे । प्रथम तीन दिन ईश्वर, जीव, सृष्टिक्रम और वेद विषय में बातचीत रही । स्वामी जी ने उनके उत्तर भलीभाँति दिये । चौथे दिन ईसा

के ईश्वर होने और मर कर जीवित होने तथा आकाश में चढ़ जाने के विषय पर स्वामी जी ने कुछ प्रश्न किये । दो-तीन सौ मनुष्य इस धर्म चर्चा के समय आया करते थे । अन्तिम दिन जब पादरी लोग इस विषय का कोई समुचित समाधान न कर सके तो स्कूल के बच्चे ताली पीटने लगे परन्तु स्वामी जी ने रोक दिया । परस्पर शास्त्रार्थ को विधि यह थी कि प्रथम एक पक्ष प्रश्न ही करे और दूसरा पक्ष उत्तर ही उत्तर दे, मध्य में प्रश्न न करे । तत्पश्चात् इसी प्रकार दूसरा पक्ष करे । प्रथम पादरी लोगों ने प्रश्न किये जिनके उत्तर स्वामी जी ने दिये । इस शास्त्रार्थ में ईसाईयों ने एक वेदमन्त्र का उद्धरण भी दिया था जिसको स्वामी जी ने अस्वीकार किया कि यह वेदमन्त्र नही । उन्होंने कहा कि वेद लाकर दिखलावेंगे परन्तु वेद से न दिखला सके ।

पादरी ग्रे साहब ने कहा कि एक बार बहुत समय हुआ स्वामी जी यहाँ आये थे । उन दिनों दंडी जी के नाम से प्रसिद्ध थे । बाग में उतरे थे, वेदान्त के विषय पर कुछ बातचीत हुई थी परन्तु वह अच्छी प्रकार स्मरण नहीं । एक बार वह पादरी राबिन्सन साहब से मिलने को यहाँ आये थे और मुझसे भी मिले और एक बार हम दोनों उनसे मिलने के लिए बाग में गये थे परन्तु स्वामी जी उन दिनों इतने प्रसिद्ध न थे ।

दयानन्द सा विद्वान् संसार में अप्राप्य, पादरी राबिन्सन – राबिन्सन साहब का जो उन दिनों बड़े पादरी थे एक प्रश्न यह था कि ब्रह्मा जी ने जो व्यभिचार किया है उसका क्या उत्तर है । स्वामी जी ने कहा कि क्या एक नाम के बहुत से मनुष्य नहीं हो सकते ? इसलिए यह कौन बात है कि यह ब्रह्मा वही है प्रत्युत कोई और मनुष्य होगा । वह महर्षि ब्रह्मा ऐसे नहीं थे । जिस पर पादरी साहब ने प्रसन्न होकर एक पत्र लिख दिया जिसका विषय यह था कि यह एक प्रसिद्ध वेद के विद्वान् हैं हमने सारी आयु में संस्कृत का ऐसा विद्वान् नहीं देखा । ऐसे मनुष्य संसार में अप्राप्य हैं । जो इनसे मिलेगा उसे अत्यन्त लाभ होगा । जो कोई सज्जन इनसे मिले वह इनका बहुत सम्मान करें ।

राजा प्रजा का पिता होता है मतमतानूतर के लोग आपकी प्रजा को लूट रहे हैं । आप इसका प्रबन्ध करें – इन दिनों एकबार स्वामी जी मेजर ए॰ जी॰ डैविडसन साहब बहादुर डिप्टी कमिश्नर अजमेर से मिलने के लिए गये । स्वामी जी ने साहब से कहा कि राजा प्रजा का पिता होता है और प्रजा पुत्रवत् समझी जाती है । जब पुत्र कोई बुरा काम करने लगे तो माता-पिता का कर्त्तव्य है कि उसको बचावे । आप राजा हैं, देश में अंधकार फैल रहा है । मतमतान्तरों के लोग आपकी प्रजा को लूट रहे हैं आप इसका प्रबन्ध करें । साहब ने उत्तर दिया कि यह धार्मिक विषय है, सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती और यदि कोई विशेष बात हो तो हमको सहायता देने में कोई आपत्ति न होगी । तत्पश्चात् स्वामी जी अपटन साहब बहादुर असिस्टैण्ट कमिश्नर अजमेर से भी मिले थे ।

(क्रमशः....)

सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद

– पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'
मो0 : 9830420496

(४)

श्री पं० देवनारायण तिवारी – आर्य समाज के उपदेशक और विद्वान् कवि हैं, इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें ४ महाकाव्य हैं । पं० जी ने सत्यार्थ प्रकाश का छन्दबद्ध भावानुवाद किया है । आर्य समाज कलकत्ता ने इसे आर्य संसार मासिक पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करने का निश्चय किया है ।

यह चतुर्थ कड़ी आपके समक्ष है । – सम्पादक

प्रथम समुल्लास (गत अगस्त अङ्क से आगे)

हो जहाँ स्तुति-प्रार्थना सर्वज्ञ, व्यापक ईश की ।
तब भाव अरु प्रकरण लखें महिमा बखानें ईश की ॥
फिर तत्र-तत्र ग्रहण करें उस ईश के शुभ नाम को ।
जो सृष्टिकर्ता शुद्ध, बुद्ध, पवित्र करता काम को ॥३४॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पुरुषः॥ यजु० ३१।५
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ यजु० ३१।१२
तेन देवा अजयन्त । (तस्माद् देवा अजायन्त)।
पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ यजु० ३१।९, ५
तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम । अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः॥
तैत्तिरीयोपनिषद ब्रह्मानन्द वल्ली, अनुवाक-२

इस भांति प्रकरण हो जहाँ औ यत्र-यत्र प्रमाण हों ।
सर्वत्र जाने नाम लौकिक, अर्थ भौतिक मान्य हों ॥
आकाश, वायु, अग्नि, जल अरु भूमि लौकिक नाम हैं ।
उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय लेकिन ब्रह्म के ही काम हैं ॥३५॥

अल्पज्ञ जड़ अरु दृश्य आदि जहाँ कहीं भी हों लिखे ।
होगा न वह परमात्मा जो सामने सबको दिखे ॥
क्योंकि न उसका जन्म होता और मरता भी नहीं ।
औ लोक के व्यवहार भी वह ईश करता भी नहीं ॥३६॥

अतएव ऐसे स्थान पर भौतिक समझना चाहिए ।
भौतिक पदार्थों को ग्रहण कर ही समझना चाहिए ॥
हों सर्वव्यापक से विशेषण तब समझना ईश है ।
है अन्यथा ईश्वर नहीं, सर्वज्ञ तो जगदीश है ॥३६॥

सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष और प्रत्यन आदि जहाँ दिखे ।
समझो विशेषण जीव का है, और वैसा ही लखें ॥
है जन्म मरण विमुक्त ईश्वर, जीव का यह धर्म है ।
उत्पत्ति स्थित औ प्रलय, संसार का ही मर्म है ॥३७॥

इस हेतु अंकित हों जहाँ पर इस तरह के शब्द तो —
समझें प्रकृति अरु जीव को, मानें न ईश्वर मर्म को ॥
कारण विराट औ विश्व आदि विशेषणों से जगत् भी —
हैं मानते विद्वान् सब, अरु शास्त्र सम्मत हैं सभी ॥३८

अब जिस प्रकार विराट आदि अनेक नाम कहे गये ।
क्यों ब्रह्म का होता ग्रहण, कैसे विशेषण ये हुए ॥
व्युत्पत्ति उनकी सिद्ध करती किस तरह से नाम को ।
औ अर्थ भी कैसे निकलता देख प्रभु के काम को ॥३९॥

उसके प्रमाण अधोलिखित हम सिद्ध करते हैं यहाँ
किस हेतु कहते नाम कह, उपयुक्त होता कब कहाँ ॥४०॥ (क्रमशः....)

५१ कुण्डों में यज्ञ पूर्णाहुति

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ हरियाणा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

शुक्रवार, १ सितम्बर से सोमवार २ अक्टूबर २०१७ तक

सानिध्य :- पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्य अधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

योगनिर्देशक एवं यज्ञब्रह्मा :-

● आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती योग-यज्ञ विशेषज्ञ की अध्यक्षता में योग साधना एवं चतुर्वेद ब्रह्मपारायण बृहद्यज्ञ १ सितम्बर शुक्रवार से आरम्भ होने पर २ अक्टूबर सोमवार ५१ कुण्डों में यज्ञपूर्णाहुति यजमान बनने के लिए आप शीघ्र सम्पर्क करें ।

● इस शुभावसर पर आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहने की दीक्षा, गृहस्थ आश्रम त्याग वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा और संन्यास आश्रम की दीक्षा लेने वाले इच्छुक बन्धु सम्पर्क करें । अत्यन्त प्रभावशाली दीक्षा समारोह का आयोजन विशाल स्तर पर किया जायेगा एवं विविध सम्मेलनों का आयोजन प्रभावशाली होगा ।

भव्य स्मारिका का प्रकाशन होना है । आप सभी से निवेदन है की स्मारिका में अपने लेख और अपनी फर्म के विज्ञापन प्रकाशनार्थ भेजकर स्मारिका की शोभा बढ़ाएं ।

आप सभी सह परिवार सादर आमंत्रित हैं ।

निवेदक :- **सर्वट्रस्टी एवं सर्व सदस्यगण**

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जि०-झज्जर, हरियाणा, पिन-१२४५०७

।।ओ३म्।।

''भीष्म पितामह ने किया राजाओं के लिए चौतीस गुणों का वर्णन''

– श्री खुशहाल चन्द्र आर्य

महाभारत में प्रसंग आता है कि जब अर्जुन के वाणों से भीष्म पितामह सर शैया पर पड़े हुए थे तब महाराजा युधिष्ठिर, भीष्म पितामह के पास जाकर चरणों की तरफ खड़े होकर यह पूछा कि हे, आचार के ज्ञाता पितामह ! कैसा आचरण करने से राजा इहलोक और परलोक में सुख देने वाले पदार्थों को सरलता से प्राप्त कर सकता है ? तब भीष्म जी बोले राजन् ! जिन गुणों को आचरण में लाकर राजा उत्कर्ष लाभ उठाता है, वे गुण चौतीस हैं । राजा को चाहिए कि वह इन गुणों से युक्त होने का प्रयत्न करें । वे गुण इस भाँति हैं :—

१. राजा स्वधर्म का आचरण करे परन्तु जीवन में कटुता न आने दे ।
२. आस्तिक रहते हुए दूसरों के साथ प्रेम का व्यवहार करना न छोड़ें ।
३. क्रूरता का आश्रय लिए बिना ही अर्थ संग्रह करें ।
४. मर्यादा का उल्लंघन न करते हुए ही विषयों का भोग करें ।
५. दीनता न दिखाते हुए ही प्रिय भाषण करे ।
६. शूर वीर बने परन्तु बढ़-चढ़ कर बातें न करे ।
७. दानशील हो किन्तु अपात्र को दान न दे ।
८. साहसी हो परन्तु निष्ठुर न बने ।
९. दुष्टों के साथ मेल न करे ।
१०. बन्धु-बान्धवों के साथ लड़ाई-झगड़ा न ठाने ।
११. जो राज भक्त न हों, से गुप्तचरों से काम न लें ।
१२. किसी को पीड़ा पहुंचाये बिना ही अपना काम करें ।
१३. दुष्टों से अपना अभीष्ट कार्य करने की न कहें ।
१४. अपने गुणों का स्वयं ही वर्णन न करें ।
१५. श्रेष्ठ पुरूषों से उनका धन न छीने ।
१६. बीच पुरूषों का आश्रय न लें ।
१७. जाँच पड़ताल किये बिना किसी को दण्ड न दें ।
१८. गुप्त मन्त्रणा को प्रकट न करें ।
१९. लोभियों को धन न दे ।
२०. जिन्होंने कभी अपकार किया हो, उन पर विश्वास न करें ।

२१. ईर्ष्या रहित होकर अपनी स्त्री की रक्षा करे ।
२२. राजा शुद्ध रहे, परन्तु किसी से घृणा न करे ।
२३. शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन करे, परन्तु अहित कर भोजन न करे ।
२४. उद्दण्डता छोड़कर विनीत भाव से माननीय पुरूषों का सम्मान करे ।
२५. निष्कपट भाव से गुरुजनों की सेवा करे ।
२६. दम्भहीन होकर विद्वानों का सत्कार करे ।
२७. ईमानदारी से धन पाने की इच्छा करे ।
२८. हठ छोड़कर प्रीति का पालन करे ।
२९. कार्य कुशल हो परन्तु अवसर के ज्ञान से शून्य न हो ।
३०. केवल पिण्ड घुटाने के लिए किसी को सान्त्वना या भरोसा न दे ।
३१. किसी पर कृपा करते समय आक्षेप न करे ।
३२. बिना जाने किसी पर प्रहार न करे ।
३३. शत्रुओं को मारकर शोक न करे ।
३४. अकस्मात् किसी पर क्रोध न करो और कोमल बनो, परन्तु अपकार करने वालों के लिए नहीं ।

इन गुणों का वर्णन करने के बाद, भीष्म पितामह ने कहा, युधिष्ठिर । यदि इस लोक में कल्याण चाहते हो तो राज सिंहासन पर बैठकर ऐसा ही आचरण करना, क्योंकि इसके विपरीत आचरण करने वाला राजा भारी विपत्ति में पड़ जाता है । जो राजा यथार्थ रूप से बताये गये इन सभी गुणां का अनुवर्तन करता है, वह इस संसार में सुख का अनुभव करके मरने के पश्चात् स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है ।

भीष्म पितामह द्वारा बताए ये चौंतीस गुण, राजा को राज्य चलाने के लिए तो लाभदायक हैं ही, साथ ही प्रत्येक व्यक्ति के लिए भी, जीवन में धारण करने से लाभकारी हैं । इसी उद्देश्य से ये चौंतीस गुण ''महाभारत के प्रेरक प्रसंग'' नाम की पुस्तक जिसके लेखक आचार्य स्वदेश जी हैं, उससे उद्धृत किया है । कृपया लेखक का विनम्र निवेदन है कि इस लेख को हर व्यक्ति पढ़े और अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन के अन्ततः व सफल बनाते हुए मृत्यु के बाद मोक्ष के अधिकारी बने ।

फोन :- २२१८३८२५ (०३३)
मो० :- ८२३२०२५५९०
९८३०१३५७९४

C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड़
(दो तल्ला) कोलकाता-७००००७

—o—

।।ओ३म्।।

ऋत सत्य और सत्य का रहस्य

– पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'
वैदिक प्रचारक

ऋतं सत्य

ईश्वर ऋत सत्य है और भूत, भविष्य व वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता है। वह तीनों कालों के चपेट में नहीं आता है। अतः सत्य शब्द केवल मनुष्य से ही सम्बंध रखता है। ईश्वर से नहीं और सत्य सदैव ऋत सत्य की अपेक्षा असत्य होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर होते हैं वहा संयोग व वियोग अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर रूपी ऋत सत्य में संयोग, वियोग नहीं होता है, सदैव सयोंग रहता है। अतः वास्तविक सत्य तो ऋत सत्य है। हम संसार में जो जो पदार्थ प्राणियों के कल्याण के लिये ईश्वर द्वारा प्रदत्त है उनके गुण कार्य स्वभाव सदैव एक रस रहते हैं वह कभी नहीं बदलते हैं जैसे सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा की शीतलता, वायु का प्रवाह, अग्नि की उष्णता, जल की प्राणदायिनी शक्ति धरती की ऊर्जा शक्ति, फलों में खटास, मिठास, उसी में अन्दर बीज की उत्पत्ति तथा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय, प्राणियों में उत्पत्ति में की स्वाभाविक प्रवृति, शरीर के इन्द्रियों के गुण कार्य कभी नहीं बदलते, प्राणियों का जन्म व मृत्यु नियमानुसार, आत्मा की नित्यता, आदि में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अदृश्य रूप से ऋत सत्य व्यवहार कार्य कर रहा है। इसलिये यह गूढ़ रहस्य है। ऋत सत्य द्वारा पदार्थों के गुण हमें सहज में प्राप्त हो रहे हैं इसलिए उनके प्रति हमारा ध्यान नहीं जाता है। इसलिए जीवनदायिनी पदार्थ ऋत सत्य सदैव हमें प्राप्त है वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त है।

सत्य

मानवीय जगत में व्यवहारिक रूप में जो जो कर्म किये जाते हैं यदि वह कार्य आदान-प्रदान में सच्चे हैं तो वह सत्य है, यदि व्यवहार में छल कपट है तो असत्य है। मानवीय जगत में कर्म गुण कर्मानुसार बदलते रहते हैं। यदि मानवीय व्यवहार में प्रत्येक कर्म को सच्चाई से सत्य के आधार पर किये जायें, तो शान्ति बनी रहती है। ईश्वर ने मानव को कर्म करने को स्वतंत्र रखा है, और सत् कर्म और असत्य कर्म मनुष्य के विवेक पर निर्भर होते हैं तथा व्यवहारिक सत्य देश काल परिस्थिति अनुसार बदलता रहता है।

जरा गहराई से विचार करे तो संसार में जो हमें दीखता है वह असत्य है और जो नहीं दिखता वही सत्य है। जो चलायमान है वह अस्थिर है, परिवर्तनशील है। वास्तव में वह अचलायमान स्थिर तथा अपरिवर्तन शील तत्व के आधार पर टिका हुआ है। हर गति तथा अगतिशीलता अचल, स्थिर

अप्रवर्तन शील तत्व के कारण टिकी हुई है । जैसे वृक्ष दृश्य है तो बीज अदृश्य है । शरीर दृश्य है तो आत्मा अदृश्य है । इसी प्रकार संसार के प्रत्येक वदृश्य परिवर्तन शील है और उसके आधार ईश्वर और उसके गुण अपरिवर्तन शील है । आईए विचार करते हैं ।

आत्म श्रद्धा का आधार सत्य है ।

भारतवर्ष का इतिहास बताता है कि महाभारत काल के बाद ईश्वरीय धर्म वेदानुकुल प्राचीन पद्धति के अनुसार सत्य पर आधारित मान्यताओं का सदैव के लिये प्रचारित करने के लिये एक सत्य का मंच आर्य समाज के संस्थापक, एकमात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे । उन्होंने दो कार्य बहुत ही उत्तम सर्वहितकारी किये एक सत्यार्थ मार्ग जानने हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और दूसरा कार्य मानव **जीवन** को सुखी व सत्यमार्गी बनाने के लिये संस्कार विधि अर्थात् जन्म से मृत्यु तक १६ संस्कारों को करने का विधान किया ।

प्रत्येक मनुष्य की अपनी आत्म श्रद्धा या आत्म गौरव की एक तोल होती है, यह तौल क्या है अपनी वाणी विचार और क्रिया के सत्य असत्य के विवेचन का वह एक माप है, जिसमें वह अपने सम्बंध की मान्यता को स्थिर करता है । मनुष्य जितना सत्य से विमुख होगा उतना ही अपने आप में अश्रद्धालु बनता है । जिसने सत्य का परित्याग कर दिया समझो उसने अपने लिये सुख का मार्ग अवरूद्ध कर दिया ।

''सत्यमेव जायते नानृतम'' सत्य की जय होती है असत्य की नहीं, सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है । आत्मा स्वयं शाश्वत सत्य है । सत्य सरल भी है और स्वाभाविक भी है । यदि तुच्छ अहंकार और स्वार्थमयता को प्रमुख न बनाया जाए तो सत्य तथ्य छिपाने की आवश्यकता ही न पड़े । सत्य की अभिव्यक्ति से ही जीवन की जटिलता का समाधान हो सकता है ।

आत्मा के ऐश्वर्य और सत्य के शाश्वत स्वरूप को शाश्वत बनाए रखने के लिये, सत्य बोलना, सत्य पर चलना, ऋत सत्य पर आधारित मान्यताओं को मानना ही जीवन का अर्थात् जीव का प्रमुख कृत्य है । सत्यधारी को ईश्वर को ढूँढने जाने के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं है वह आत्मा में ही ईश्वरीय दर्शन का आनन्द लेता है । सत्य जीवन की मधुरता है जीवन की पूर्णता है ।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप ।।

हम असत्य को सत्य अस्थिर परिवर्तनशील को अपरिवर्तन शील, क्षण भंगुर को सनातन और प्रतीतों के प्रति जागे हुए हैं और प्राप्त के प्रति सोए हुए हैं । असत्य के प्रति जागे हुए हैं और सत्य के प्रति सोये हुए है । जीवन का लक्ष्य सत्य जानना है । हमारा जीवन असत्य में बीत रहा है, हम चारों और से असत्य से घिरे हुए है । क्योंकि ऋत सत्य सर्वव्यापक है और निकटतम होने के कारण अदृश्य है । सत्य हमारे जन्म से पहले भी था और हमारी मृत्यु के बाद भी रहेगा इसलिए हमारी खोज का विषय ऋत सत्य ही होना चाहिए ।

सत्य असत्य के मूलगत भेद क्या है ।

विश्व ऋत सत्य के आधार पर टिका हुआ है । असत्य वस्तु असत्य विचार, असत्य संस्था के भीतर उसके तोड़ने वाले तत्व रहते हैं, इसी को अर्न्तद्वन्द कहते हैं । असत्य के पेट में पड़ा जो अन्दर का विरोध है, वह सत्य को धीरे-धीरे फोड़ता जाता है और असत्य के भींतर सत्य अपने पैने पन से उभर आता है । क्योंकि सत्य दुविधा रहित व द्वेष रहित होताहै । जहां भीतर सत्य और असत्य होंगे वहीं तो संघर्ष होगा । हमने जितनी भी संस्थाएँ व धर्म सम्प्रदाय बनाए हैं उनका प्रमुख लक्ष्य सत्य को टूटना है । कोर्ट में वकील सत्य को टूटने के लिये ही तो लड़ते हैं और जज का कार्य सत्य असत्य को ढूंड निकालना है । तभी वेदों ने कहा है सारा संसार ऋत सत्य पर टिका हुआ है ।

निष्कर्ष

वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा जो वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ है उसमें वर्णित शिक्षा और संसार में सत्यवादी सत्यपथ गामी युग पुरूषों ने सत्य को जाना और प्रचार करते-करते अपने जीवनो की आहुति दे दी । यदि संसार के सभी धर्म सम्प्रदाय संगठन सत्य औरं ऋत सत्य पर व्यवहारिक चलने का आवाहन करे तो, मानव समाज में तमाम अन्धविश्वास रूढ़ी वादिता उग्रवाद हिंसा द्वेष, समाप्त हो जायेंगे । जिस दिन हम सत्य और ऋत सत्य को समझ जायेंगे और तदनुकुल व्यवहार करने लगेंगे बस उसी दिन से हम ईश्वर को समझ सकेंगे और तब हम किसी भी जगह खड़े होंगे तो यही कहेंगे सत्यमेव जयते नानृतम ।

मो०- ९४११५१२०१९
९५५७६४१८००

गढ़निवास मोहकमपुर
देहरादून, उत्तराखण्ड

—०—

(पृष्ठ २३ का शेषांश)

महर्षिस्वामिदयानन्दस्य भाष्यविषये काश्चित् सम्मतयः - ''महर्षि स्वामिदयानन्देन संस्कृत भाषायां'' 'वर्णव्यवस्थायाः' या व्याख्या कृता सा युक्तियुक्तास्ति / भारतरत्न डॉ० बाबासाहेब आम्बेडकर ।

स्वामिदयानन्दस्य संस्कृतवेद भाष्यमतीव विद्वत्ता पूर्णोऽस्ति । तेषामध्यमनमंपि सर्वाङ्पूर्णः आसीत् । प्रो० मैक्समूलर ।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती - अस्मिन् युगस्य प्रथम पुरूषोऽभवत् । येन प्रथमवारं वेदभाष्य - करणाय निर्दोष प्रणाली - अवलम्बिता । धनागाराणां ग्रन्थं कथयित्वा यस्योपहासं कुर्वन्ति । तेभ्यो वेदमंत्रेभ्य एवं सत्य सनातन - वैदिक धर्मस्य स्वरूपं दर्शितवान् । — रवीन्द्रनाथ टैगोर ।

प्रशान्तनगरम्
अमरावती-४४४६०६ (विदर्भ)
मो० ९४२२१५५८३६

हमारा स्वाधीनता पर्व (15 अगस्त एवं 26 जनवरी)

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि :-

समय था जब भारत न केवल विश्वगुरु था, वरन् विश्व-सम्राट भी था । कालचक्र से यह महान् देश अपनी स्वतंत्रता को खोकर किस प्रकार विदेशी दासत्व का शिकार हुआ इसकी एक लम्बी और दर्द भरी कहानी है । हाँ, यह सत्य है कि कभी — महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी, तो कभी गुरु गोविन्द सिंह और बन्दा वैरागी, तो कभी बाल हकीकत और जोरावर फतेहसिंह जैसे बालवीर महावीर और राष्ट्रनायक अपने शौर्य और बलिदानों द्वारा हमारी परतंत्रता के पाप को ललकारते रहे । इस प्रकार यह सुस्पष्ट है कि अपनी दासता के सम्पूर्ण कालखण्ड में भारत की आत्मा ने एक क्षण के लिये भी पराधीनता को स्वीकार नहीं किया ।

महाराणा प्रताप व शिवाजी के समय से उद्‌बुद्ध हमारे **स्वाधीनता यज्ञ का विधिवत आरम्भ** मङ्गल पाण्डे, महारानी लक्ष्मीबाई, तॉत्याटोपे और बिठूर के नानासाहब जैसे महावीरों और वीराङ्गनाओं द्वारा सन् १८५७ की जनक्रान्ति से हुआ और **इसकी पूर्णाहुति** १५ अगस्त १९४७ को हुई ।

सन् १८५७ की जनक्रान्ति की पृष्ठभूमि के निर्माण में युग पुरुष महर्षि दयानन्द, उनके गुरुदेव दण्डी विरजानन्दजी और उनके भी गुरु स्वामी पूर्णानन्दजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा था, यह तथ्य धीरे-धीरे अब उजागर होता जा रहा है । सन् १८५७ की क्रान्ति को क्रियान्वित करने के पूर्व सन् १८५६ में मथुरा में एक विशाल सभा हुई थी । उसमें सर्वखाप पञ्चायत, हरियाणा के प्रतिनिधि के रूप में मीर मुश्ताक मिरासी ने भाग लिया था । उन मीर साहब के दो पत्र पिछले दिनों प्रकाश में आये, जिनसे प्रकट हुआ कि इस बैठक में प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द जी को एक पालकी में लाया गया था और उन्होंने इस सभा को अंगरेजी दासता के विरोध में बड़े मार्मिक शब्दों में सम्बोधित किया था । आगे की शोध के बारे में हम नहीं जानते ।

सन् १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के विफल होने पर जब सर्वत्र निराशा छा गई थी, ऋषि दयानन्द ने तब अपने अमर ग्रन्थ **सत्यार्थ प्रकाश** में स्वराज्य एवं स्वदेशी की भावना को अनेक प्रकरणों में बड़ी प्रखरता से प्रस्तुत किया । इतना ही नहीं विदेशी दासता के विरोध में सुस्पष्ट रूप से क्रान्तिबीज का वपन भी उन्होंने कर दिया ।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन (१८७५) के दश वर्ष के बाद काँग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज महाशय मिस्टर ए० ओ० ह्यूम् द्वारा की गई । आरम्भ में सर फीरोजशाह मेहता एवं दादाभाई नारोजी के समय तक तो काँग्रेस के समक्ष स्वराज्य प्राप्ति का लक्ष्य ही न होकर कुछेक व्यक्तियों को नौकरियाँ तथा पद आदि दिलाकर सन्तुष्ट करना मात्र था । काँग्रेस के इस उद्देश्य में एक क्रान्तिकारी मोड़ तब आया जब इसकी बागडोर महादेव गोविन्द रानाडे जैसे ऋषि दयानन्द के भक्तों

के हाथ में आई, उसके बाद ही काँग्रेस भारतीय स्वाधीनता संग्राम की प्रतीक बन सकी थी पर पता नहीं क्यों स्वाभिमान प्रेरक इन तथ्यों से देशवासियों विशेषकर हमारे कोमलमति बालकों को अब तक अवगत ही नहीं कराया जा सका है। इतिहास की विसंगतियों को दूर कर लेने में ही देश का कल्याण निहित है ।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम की आरम्भ से ही दो धारायें रही हैं । निष्पक्ष इतिहासज्ञों ने इसे (१) शान्तिधारा और (२) क्रान्तिधारा का नाम दिया है । इन **दोनों धाराओं का उत्स (मूल-उद्गम) ऋषि दयानन्द** थे । शान्तिधारा के क्रम में स्वराज्य की जो गङ्गा दयानन्द रूपी हिमालय से प्रादुर्भूत हुई वह रानाडे एवं गोपालकृष्ण गोखले रूपी उपत्यकाओं को सींचती हुई, महात्मा गाँधी रूपी क्षेत्र में आकर भारतीय स्वाधीनता रूपी हरियावल का कारण बनी और क्रान्तिधारा के जनक श्यामजी कृष्णवर्मा भी ऋषि दयानन्द के ही शिष्य थे । ऋषि ने ही उन्हें शिक्षार्थ बाहर (इंगलैण्ड) भेजा था ।

शान्तिधारा में आगे चलकर गरम दल और नरम दल — ये दो उपधारायें हो गई । लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल यह लाल-बाल-पाल का त्रिक् गरम दल से सम्बद्ध था, जबकि पं० मोतीलाल नेहरू, पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डा० राजेन्द्रप्रसाद, सेठ गोविन्ददास, लालबहादुर शास्त्री जैसे कर्मयोगी एवं चिन्तक सभी महात्मा गाँधी के साथ थे । सन् १९१९ का जलियाँवाला बाग का खूनी काण्ड, १९२१ का असहयोग आन्दोलन, १९३१ का नमक कानून विरोधी सत्याग्रह, १९४१ का व्यक्तिगत सत्याग्रह और १९४२ का अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन — ये सभी स्वाधीनता संग्राम के विविध मोर्चे हैं, जिनमें से अधिकांश का नेतृत्व महात्मा गाँधी ने किया । आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की इन सभी आन्दोलनों में ७० से ८० प्रतिशत तक भागीदारी रही । आर्यनेता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द इनमें अग्रणी थे ।

क्रान्तिधारा भी श्यामजी कृष्णवर्मा वीर सावरकर, चापेकर बन्धु, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, रासबिहारी बोस, अरविन्द घोष, भाई परमानन्द, भाई बालमुकन्द, हरिश्चन्द विद्यालङ्कार, राजा महेन्द्रप्रताप, मदनलाल धींगरा, गेंदालाल दीक्षित, रामप्रसाद विस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ, रोशनसिंह, सुखदेव, राजगुरु, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि महावीरों के माध्यम से देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अपने बलिदानों द्वारा स्वाधीनता के पथ को निरन्तर प्रशस्त करती रही । इनमें भी अधिकांश आर्यवीर ही थे ।

स्वाधीनता के इस महायज्ञ में वीर शिरोमणि नेताजी सुभाष का आत्मत्याग और बलिदान भी अपना अनूठा महत्व रखता है । आजाद हिन्द फौज के निर्माता इस अद्वितीय यौद्धा सेनानी का नाम भारतीय स्वाधीनता इतिहास में अमर रहेगा ।

इस प्रकार असंख्य वीरों के आत्म-बलिदान तप और त्याग की नींव पर स्वाधीनता के भवन का निर्माण हुआ और सदियों की गुलामी के पश्चात् १५ अगस्त सन् १९४७ ई० को स्वतंत्रता सूर्य का उदय हुआ और २६ जनवरी सन् १९५० ई० को भारत का संविधान संस्थिति में आया और तब से हमारे

वर्तमान गणतंत्र शासन का आरम्भ हुआ ।

पर्व महत्व – १५ अगस्त एवं २६ जनवरी हमारे महान् राष्ट्रीय त्यौहार है । इन दिवसों पर हमें भारतीय स्वाधीनता के लिए बलिदान और तप-त्याग करने वाले वीरों के प्रति श्रद्धाञ्जलि एवं भावाञ्जलि अर्पित करते हुए भारत की स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने के लिये और अपने महान् देश को पुनः उसका विश्वगुरु का स्थान दिलाने के लिये, अपना कर्त्तव्य पूर्ण निष्ठा से निभाने हेतु निम्न प्रकार व्रत लेना चाहिये :—

(१) हम स्वराज्य को सुराज्य (रामराज्य) बनाने के लिए स्वयं अपने आचार-व्यवहार को अच्छा यानि उत्तम बनावेंगे ।

(२) हम अपने अन्दर सद्-स्वाध्याय की प्रवृत्ति को जगाकर सामाजिक राजनीतिक शोषण के साथ ही देश में धड़ल्ले से पनपते जा रहे धार्मिक शोषण से भी स्वजाति की रक्षा हेतु सजग, सचेष्ट रह कर स्वकर्त्तव्य का निर्वहन करने का यथासम्भव उपाय करेंगे ।

(३) हम कोई कार्य-व्यापार या व्यवसाय ऐसा नहीं करेंगे जो हमारे भारत के गौरव को लेशमात्र भी कम करे ।

(४) हम अपने वोट को शहीदों की धरोहर मानकर उसका उपयोग जाति-बिरादरी अथवा किसी भी प्रकार के प्रलोभन से ऊपर उठकर योग्यतम एवं चरित्रवान् उम्मेदवार के लिए तथा और भी सोच समझकर करेंगे ।

(५) हम अपनी व्यक्तिगत दिनचर्या एवं जीवन चर्या को महान् भारत के एक श्रेष्ठ नागरिक की, एक आदर्श मानव (आर्य) की दिनचर्या बनायेंगे । हम अपनी सन्तानों को सुसंस्कारवान दिव्य सन्तान बनाने का पुरजोर उपाय करेंगे और अपने परिवार में श्रेष्ठता (यानि आर्यत्व) को प्रतिष्ठित करेंगे जिससे हमारा प्यारा भारत आर्यराष्ट्र बनकर फिर से **विश्वगुरु** का गौरव पा सके ।

(६) हम अपने राष्ट्रध्वज का सम्मान करते हुए भारत भू को अपनी मातृभूमि, पितृभूमि और पुण्यभूमि मानेंगे तथा भारत के हर निवासी को अपना राष्ट्र-बन्धु मानकर राष्ट्र में व्याप्त अज्ञान, अन्याय और अभाव में से कम से कम किसी एक शत्रु के दूरीकरण के लिए समर्पित होकर स्वजीवन का ही राष्ट्रीयकरण करेंगे, उसे धन्य करेंगे ।

संकलन एवं प्रस्तुति

चान्दरतन दमानी

प्रधान,

आर्यसमाज बड़ाबाजार

कोलकाता-७००००७

—०—

।।ओ३म्।।

''ऋषि दयानन्दस्य वेदभाष्यं – संस्कृत साहित्याय वरदानम्''

– पं० सत्यवीरः शास्त्री

आर्यसमाजस्य संस्थापक—स्वामी—दयानन्दस्य व्यक्तित्वं एवं कृतित्वमनुसृत्य यदा वयं चिन्तनं कुर्मस्तदा विदितं भवति यद् स्वध्येयस्य पूर्त्यर्थं ''संस्कृतभाषायाः तथा तस्याः साहित्यात् कार्यं कर्तुमदम्यप्रेरणा सम्प्राता । तेषां प्रारम्भिकिशिक्षा-दिक्षा प्राचिना परिपाठिनाभवत्। यद्यपि तस्य पिता कर्षण जी तिवारी सामवेदी—ब्राह्मणस्तदपि वैष्णवमतानुयायी । अतः परिवारे यजुर्वेदस्य, पठन-पाठनस्य प्रणाली आसीत्। केवलं चतुर्दशवर्षीय बालकमूलशंकरेण संपूर्ण-यजूर्वेद-संहिता कण्ठस्थीकृता । अन्यान् वेदान् पठनस्य महती जिज्ञासा परिपूर्णा न जाता । व्याकरण—छन्द—ज्योतिष—शिक्षा—कल्पाध्ययनार्थं काशीनगरीं'' गमनस्य तीव्रा मनीषा आसीत् । शिवशंकरस्य दर्शनार्थं गृहत्यागे—सन्यासधारके तस्य पठनपाठनस्य ज्ञानलालसा मथुरायाः व्याकरणसूर्यस्वामि विरजानन्दस्य समीपे परिपूर्णा । किन्तु शास्त्रमन्थनकार्ये संलग्नन्—अष्ठादश—पुराणानि—उपपुराणानि—शिवसंध्या—हठ—प्रदिपिका-योगबीज-शैव-शाक्त-बौद्ध-उपनिषद-स्मृति-शास्त्र-ब्राह्मणग्रन्थान् पठन् - दशसहस्रान् - अन्यान् ग्रंथान् पठित्वा अस्मिन्-निष्कर्षे गतवान्— ''वेदा एव समस्त—मानवजातिनां समग्रप्राणिजीवनानां कृते-बहुमूल्य-उदात्ततमः ईश्वरीयः संदेशोऽस्ति।'' वेदान्-वेदमन्त्रान् - सुरक्षितं स्थापनस्य महत्वपूर्णकार्यं दक्षिणदेशीयब्राह्मणैः अथवा, येषु परिवारेषु वेदानां कण्ठस्थकरणस्य परिपाठी-आसीत् तैः कृतम्। एते वेदपाठिनः प्रतिमंत्रं स्मर्तुं तथैव मंत्रे एकापि मात्रायाः लोपो वा, अधिका न भूयात्-तथा च तस्मिन्-वृद्धिः वा परिवर्तनं न भवेद् - एतदर्थे - प्रकृति - विकृति - पाठभेदेन - संहितापाठ - पदपाठ - क्रमपाठ - जठापाठ - पुष्पमालापाठ - क्रममाला पाठ - शिखा पाठ - रेखापाठ - दंडपाठ - रठापाठ - ध्वजपाठ - घनपाठ - त्रिदलघनपाठान् - कुर्वन्ति स्म । तथाच हस्तैः उदात्त - अनुदात्त स्वरितस्वराणां प्रदर्शनमपि - अकुर्वन् । ''वेदरक्षां कुर्वणाः एते ब्राह्मणा वन्दनीया इति महर्षिस्वामी दयानन्देनोक्तम्। अपरञ्च वेदरक्षार्थं कृतान् प्रयत्नान् समीक्ष्य प्रो० मैक्समूलर स्वग्रंथे —''

Origin of Rellgion पृष्ठे — १३१ लिखति The tex is of vedas have been handed down to us with such accuracy that their is hardly a various reading in the proper sense of the word or even uncertain aspect in the whole Rigveda ''यदा ऋषिदयानन्दः वेदप्रचारं कर्तुमारभत तदा, वेदानां विषयेऽनेकाः भ्रान्तयः-आसन्। केंचित् वदन्ति शंखासूरनाम राक्षसो वेदान् चोरयित्वा नीतवान् । केचित् वदन्ति ''सर्वे संस्कृतग्रंथाः'' वेदाः सन्ति केचिद् वदन्ति । वेदे पर्वतस्य नद्याः राज्ञां वर्णनमपि विद्यते । केचिद्वदन्ति ''परमेश्वरेण'' वेदज्ञानं—ब्रह्मणे दत्तम् । ब्रह्मनः चत्वारि मुंखानि - आसन् - तेन प्रतिमुखेन - एकमेकस्य वेदस्य ज्ञानं प्रसारितम् । पाश्चातीया - कथन् - ऋषियःएव मंत्रानां रचयितारः सन्ति ।

देवताः एव वेदमंत्रानां संकलनं - कर्त्तारःसन्ति । केचिद् वदन्ति ''त्रय वेदस्य कर्तारः भाण्डधूर्त निशाचराः। जर्फरी - तुर्फरीति पण्डितानां वचांसि स्मृताः ।''

अखिलशास्त्रवेदवेत्ताऋषिदयानन्देन वेदमंत्राधारेण सर्वा भ्रान्तयो दूरीकृताः। परमेश्वरेण - ऋग्वेद - यजुर्वेद - सामवेद - अथर्ववेदानां ज्ञानं, क्रमश - अग्नि - वायु - आदित्य - अंगिरानाम - ऋषिभ्यः प्रदत्तम् । तेभ्यः चत्वारेभ्यः ऋषिभ्यः येन प्रथमं ज्ञानं प्राप्तं स ब्रह्मा बभूव । ब्रह्मा सर्वजनेभ्यः वेदज्ञानं प्रसारितवान् । पुराकाले वेदा ग्रन्थरूपेण न दृश्यन्तेस्म अतो हि सामान्यपुरूषा कथयन्ति स्म शंखासूरेण चोरयित्वा नीताः। वेदाः अपौरूषेयाः । ''ऋषयो मंत्र द्रष्टारः'' ऋषयः मन्त्राणां रचयितारः न सन्ति । अपितु मंत्रस्य स्वयं साक्षात्कारं कृत्वा ज्ञानं परेभ्यः ददति इति वेदज्ञान - परम्परा - अनन्तकालात् - आगता, तथा आगामी कालेऽपि चलिष्यति । प्रलयान्तेऽपि ग्रंथरूपेणवेदा, छन्दरूपेण लिखिता मन्त्रा विनष्यन्ति किन्तु ज्ञानं तु समाप्तं नैव भविष्यति तद् परमात्मनि स्थिरं भवत्येव । शब्दो नित्योऽस्ति, परमेश्वर एव नित्यः। यथा वेदे :—

''स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपाप विद्धम् ।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथात श्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः। यजुः अ० ४०।१८''

सरल संस्कृतेऽर्थ :- ईश्वरः सर्वतः व्याप्तः शक्तिमान् शरीर विरहितो, व्रणरहितः शुद्धस्वरूपः, पापरहितः, कविः मनिषी, सर्वव्यापकः कदापि उत्पन्नो न जातः, (सत्) तेनैव सदैव विद्यमानेन परमेश्वरेण मनुष्य सृष्टिप्रारम्भ काले स्वपुत्रेभ्यः मानवेभ्यः जगतस्थ सर्वसुख सम्पादनार्थ स्वसामर्थ्येन वेदज्ञानं प्रदत्तम्। (अहं भूमि ददामि आर्याय—ऋग्वेद)

पुराकाले वेदानां कृतानां भाष्यानां विषये महर्षि-स्वामिदयानन्दः लिखति ''(ऋग्वेदादि भाष्यभूमिकायाम्)'' यानि रावणोव्वटसायणमहीधरादिभिः वेदविरूध्दानि भाष्यानि कृतानि, यानिच एतदनुसारेण इंग्लैंड - शार्मण्य - देशोत्पन्नैःयूरोप - खण्डनिवासिभिः स्वदेशभाषया स्वल्पानि व्याख्यानानि कृतानि तथैव आर्यावर्तदेशस्थैः कैश्चित् तदनुसारेण प्राकृतभाषय व्याख्यानानि कृतानि वा क्रियन्ते तानि सवार्णि अनर्थगर्भाणि सन्ति । यतो हि रावणोव्वट सायणमहीधरादिभिः वेदमंत्रानामर्थः केवलं कर्मकाण्डयुक्तं व्याख्यानयुक्तं वा रूढ़िवादं कृतः। प्रो० मैक्समूलरस्तस्य शिष्य मॅकडानलस्य भाष्यं विकासवादयुक्तं - इतिहासपूरितं विद्यते (न तत्र - धर्मः अर्थः कामः - मोक्षः) महर्षिदयानन्दस्य वेदभाष्यं रूढीं संत्यज्य निरूक्तमनुसृत्य, ईश्वरं विज्ञानमनुसरति ।

अतो हि तस्य भाष्ये ''रोचकता'' अर्थे स्वतंत्रता, अनेकार्यता दृश्यते । स्वामिदयानन्देन शब्दानां प्रचलितार्थं न गृहीत्वा यौगिकार्थं कृतम् । यथा ''इन्द्रः'' इन्द्र शब्दस्यार्थ कुर्वन् — पुराण प्रसिद्ध राजा 'इन्द्रः' न कृत्वा, इन्द्र शब्दस्य निरूक्तिकृता। ''इदि'परमेश्वर्यैः'' यस्मिन् - ऐश्वर्यस्यात् स इन्द्रः ऐश्वर्यार्थकरणेन इन्द्रशब्दस्य अर्थः परमात्मा, सूर्यः विद्युत्, नृपः भवति। यास्काचार्येणापिस्वीकृतम् अनेकानां शब्दानां एक एव अर्थोभवति अथवा एकशब्दस्य अनेकार्थाः - भवन्ति । यथा —

''इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुः अथो दिव्यः स सुपर्णो गुरूत्मान् ।

एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति, अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। ऋग्वेद १-१६४-४६''

महाभाष्यकार—पतंजलि - कुमारिल भट्ट - शबरस्वामि - स्कन्दाचार्य - दुर्गानन्द - वररूचि - भट्टभास्करात्मानंन्दादयः वेदे आगतान् शब्दान् ''योगिकाः'' मन्यन्ते । यस्मिन् मन्त्रे रूढार्थं गृहीतं तत्रैवानर्थो भवति । वेदेषु यज्ञं विष्णुः राष्ट्रं अश्वेमधः, मनः भारद्वाज, चक्षु - जमदग्निः कथ्यन्ते ।

पुराकाले वेदानां नामानुसारेण मनुष्यानां नामाभिधानं कुर्वन्ति स्म । नामानुसारेण अर्थं न भवति । यथा ''कृष्णायाः पुत्रोऽर्जुनः'' - अथर्ववेद १२।३।३६ अस्य वाक्यस्य सरलार्थः भवति, 'द्रौपद्याः पुत्रः अर्जुनः' किन्तु एषोऽर्थः इतिहास महाभारत विरूद्धोस्ति इति कोऽपि कथयिष्यति । पदानां यौगिकार्थः कृते सति अर्थो भवति (शतपथब्राह्मणे) ''रात्रिर्वैकृष्णा'' असौ आदित्यः तस्या वत्सोऽर्जुनः अन्धकारधारणात् रात्रिर्नाम कृष्णा, श्वेतत्वात् सूर्यस्य नाम अर्जुनोऽस्ति। अतोऽत्र महाभारतस्यार्थः गृहीतुं. न शक्यते ।

तथाच 'गौ' एक एव पदोऽस्ति । परन्तु - गौ - गच्छतिइति निरुक्तिना 'गौ' शब्दोऽनेकार्थी भवति। गौ, सूर्यकिरणाः पृथिवी, आदयः ।

यास्काचार्येण देवता काण्डे निर्दिष्टम् — त्रिविधाः मंत्राः यत्कामः ऋषिः यस्यां देवतायां आधिपत्यं इच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्त तत् देवतः स मंत्रो भवति ।

''ताः त्रिविधाः ऋचः, परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः आध्यात्मकृताश्च । तत्र परोक्षकृताः सर्वभिर्नाम विभक्ति युज्यन्ते प्रथम पुरुषैश्चारव्यातस्य । अथ परोक्षकृताः मध्यमपुरुषयोगाः 'त्वम्' इति चैतेन सर्व नाम्ना । अथापि प्रत्यक्षकृत्ताः स्तोतारो भवन्ति, परोक्षकृतानि स्तोतव्यानि । अध्यात्मिकाश्च उत्तमपुरुष योगाः 'अहम्' इति चैतेन सर्वनाम्ना ।''

यजुर्वेदस्याष्टदशमेऽध्याये अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका, त्रीणि नामानि आगतानि सन्ति । याःतिस्त्र - राजकुमारीः भीष्मपितामहेन जीत्वानीताः आसन् । एताः काशीराज्ञः कन्यकाः एतद् पठित्वा केचन् विद्वांसः कभयन्ति वेदे इतिहासो विलसति किन्तु ऋषिवरस्वामिदयानन्देन लिखितं नैतद् सत्यम् । काशीराज्ञा वेदेषु नामानि वीक्ष्य स्वकुमारीणां नामाभिधानं कृतम्। यथाः ''सर्वेषां नामानि कर्माणिच पृथक् पृथक्।''

वेद शब्देभ्यः एवादौ, पृथक्, संस्थांश्च निर्ममे । मनु - १२-१। वेदेषु अम्बाशब्दस्यार्थः माता, अम्बिकाशब्दास्यार्थ मातामही अम्बालिका शब्दास्यार्थः परमातामही विद्यते ।

''अष्टचक्राः नवद्वाराः देवानांपुरः अयोध्या'' इति पठित्वा केचिद् वदन्ति वेदे अयोध्यायाः वर्णनं वर्तते । एतदपि युक्तं नास्ति। वेदेषु, गणित-विद्यायाः मूलस्त्रोतमस्ति इति दिग्दर्शित महर्षिणा - यथा चत्वारश्च मे षोडशश्चमें, विशंतिश्च मे, विशतिश्च, मे,.....अष्टचत्वारिशंत् मे, अष्टचत्वारिशंत् मे । अस्मिन् मंत्रे चत्वारशब्दस्य पाठकः अस्ति।

भारतीयसंस्कृतीनां यावत्ग्रन्थाः तेषु सर्वेषु वेदाः प्राचीनतमाः। येषां कोऽपि कालो निश्चितं न कर्तुं शक्नोति । सँसारे यान् ग्रंथान् जनाः 'धर्मग्रंथाः' मन्यन्ते तेषां सर्वेषां कालो निश्चितमस्ति । केवलमात्रं

'वेदा एव' ईदृशाः धर्मग्रंथा ''येषां निर्माण कालो भारतीयाः पाश्चातीयाश्च निश्चितं कर्तुमसमर्थाः।''

प्रकाण्डवेदविद्वान् स्वामी दयानन्दवेदमंत्राधारेण वेदानां कालः अनादिः अमन्यत। यथा — ''यस्मात्ऋचः अपातक्षन्'' यजुः यस्मात् अपाकषन् । सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गि, रसो मुखम् स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेवः सः। अथर्व १०-७-२० ऋग्वेदस्य प्राचीनतां प्रो० मैक्समूलरोऽपिस्वीकृतवान् । सायणभाष्यस्य चतुर्थ खण्डस्य भूमिकायां स लिखतिः।

After the lasts reserches in to the history and chronology of the book of old tesment we may now sately call the Rigveda the oldest book not only Aryan Cumunity but of the wholl word.

स्वामिदयानन्देन संपूर्ण यजुर्वेदस्य ऋग्वेदस्येकादश काण्डानां भाष्यं संस्कृत भाषायां कृतम् । तथैव ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका शिक्षापत्रीध्वान्त, निवारण - काशीशास्त्रार्थ - संस्कृत - वाक्यप्रबोध पञ्चमहाविधि - वर्णोच्चारणशिक्षा - सन्धि विषय - नामिक कारकीय - सामासिक - सत्रैणाताद्धित - अव्ययार्थ - आख्यातिक - सौवर - पारिभाषिक - धातुपाठ - गणपाठ - उणादि कोष - निघण्टु - ग्रन्थानां प्रकाशनमकरोत् ।

कानिचित् — भावपूर्ण - रसपूर्णश्लोकानि रचितवान् - स्वामिदयानन्दः । आर्याभिविनयनाम्नः

पुस्तकस्य प्रारम्भे श्लोकोऽस्ति ।

दयाया आनन्दो विलसति परः स्वात्मविदितः।
सरस्वत्यस्याग्रे विलनिवसति मुदा सत्यनिलमा ।
इयं ख्यातिर्यस्य प्रलसित गुणा वेदशरणाऽ
स्त्यनेनायं ग्रन्थो रचित इति बोधव्यमनघाः।

महर्षि स्वामिदयानन्देन विज्ञापनमपि संस्कृतभाषायामेव कृतम् - यथा - अष्ट गप्पम् :-

१) मनुष्यकृत ग्रन्थान् वेदकथनं प्रथमं गप्पम् ।

२) ईश्वरबुद्या पाषाणादिपूजनं द्वितीयं गप्पम् ।

३) साम्प्रदायिकग्रन्थाः-तृतीयं गप्पम् ।

४) वाममार्गमाचरणं चतुर्थं गप्पम् ।

५) भांग - आदि - नशाकरणं पंचमं गप्पम् ।

६) परस्त्री गमनं षष्ठं गप्पम् ।

७) चौर्यकर्मकरणं सप्तमं गप्पम् ।

८) छलकपटाभिमानानृतभाषणमष्टमं गप्पम् ।

वेदभाष्यं सरल संस्कृते कृत्वा ऋषिणोदघोषितम् - वेदेषु - गणित - भूमिति - ज़्योतिष - भूगोल - खगोल - विमान तार - वैद्यक - सर्वाविद्यामूलरूपेण विलसन्ति ।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

वेद में ईश्वर का स्वरूप

– श्री कामता प्रसाद मिश्र

वेद में ईश्वर की जिन विशेषताओं का वर्णन किया गया है अथवा ईश्वर का जो शुद्ध रूप दिया गया है उसमें सर्वत्र पूर्णता एवं शुद्धता के दर्शन होते हैं। वह अन्यत्र नहीं है। अनेक धर्म, पन्थ सम्प्रदायों ने ईश्वर के स्वरूप को वेद के उलटे भी बतलाये हैं। परन्तु निराकार, अजन्मा, शरीर रहित शुद्ध ईश्वर का जो रूप वेद में दिया गया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। वेद में ईश्वर के विषय में कहा है –

अपादशीर्षा। (ऋ० ४।१।११)

वह पाँव सिर आदि अवयवों से रहित है।

अपादिन्द्रो अपादग्निः। ऋ०८।६९।११

परमैश्वर्यवान परमात्मा निराकार है, प्रकाशस्वरूप परमात्मा निराकार अर्थात् आकार रहित है।

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः। यजु० ३२.३

जिस परमात्मा का महान यश है उस परमात्मा की कोई मूर्ति और परिमाप नहीं है।

अकायमव्रणमस्नाविरम्। यजु० ४०।८

वह परमात्मा शरीर-रहित, छिद्र रहित और नस-नाड़ी के बंधन से रहित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वर के स्वरूप की व्याख्या करते हुए आर्य समाज के दूसरे नियम में यह कहा है :–

''ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।''

महर्षि ने ईश्वर को सच्चिदानन्द कहा अर्थात् परमात्मा सत् है चित् अर्थात् चैतन्यस्वरूप है, आनन्दस्वरूप है। सत् वही हो सकता है जो सदा वर्तमान रहे, सदा वर्तमान वही रहेगा जो जन्म और मरण से रहित हो। यदि ईश्वर का जन्म माना जाय तो इसका अर्थ हुआ कि वह जन्म के पहले नहीं था अर्थात् वर्तमान में है किन्तु भूतकाल में नहीं था। यदि परमात्मा का जन्म माना जायगा तो उसकी मृत्यु भी माननी होगी। यदि ऐसा माना जायगा तो इसका अर्थ यह होगा कि वह वर्तमान में तो है परन्तु भविष्य में नहीं रहेगा। ऐसा पदार्थ सत्य नहीं हो सकता सत् पदार्थ के लिए एकरस औरं कालातीत होना आवश्यक है।

चित् वह है जो चैतन्य स्वरूप, सत्यासत्य का जानने वाला है वही ब्रह्म चित् है। चेतन उसे कहते हैं जिसमें जड़ता न हो।

ईश्वर आनन्दस्वरूप है। वह दुःख, क्लेश और शोक से रहित है। वह आनन्दमय है। जो जीवात्मा योगाभ्यास के द्वारा उसकी समीपता प्राप्त करते हैं वे भी आनन्द की अनुभूति करते हैं। जो योग साधना कर समाधि सिद्ध कर लेते हैं उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है।

परमात्मा के प्रमुख तीन गुणों की यहाँ हम व्याख्या प्रस्तुत करते हैं जो मानवादि में कभी संभव नहीं है। उदाहरणार्थ — वेदों ने ईश्वर को 'सर्वव्यापक' (Omnipresent) 'सर्वज्ञ' (Omniscient) सर्वशक्तिमान (Omnipotent) बताया है। ये तीनों गुण मात्र परमात्मा में ही पाये जाते हैं। अन्यत्र कहीं भी नहीं बताया गया है। विश्व के किसी भी आस्तिक धर्म तथा दर्शन में परमात्मा का इससे बढ़कर कोई गुण या विशेषता नहीं बतायी गई है। इन्हीं गुणों की व्याख्या यहाँ की जाती है। यहाँ परमात्मा के सब गुणों के सम्बंध में वेदों के उद्धरण न देकर उपर्युक्त तीनों श्रेष्ठ विशेषताओं के बताने वाले मंत्रों को ही दिया जा रहा है।

ईश्वर सर्वव्यापक है :-

एषो ह देवा प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उगर्भे अन्तः स एव जातः सजनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।। (यजु ३२।४)

अर्थात् वह परमात्म देव सब दिशाओं में है सबसे पहले था सबके अन्दर है वह सब ओर देखने वाला पैदा हुए और पैदा होने वालों के सब ओर अर्थात् सर्वत्र व्यापक है।

अनन्तं विततं पुरुत्रानन्तमन्तवच्चा समन्ते।

ते नाकपालश्चरति विचिन्वन् विद्वान् भूतमुत भव्यमस्य।।

अथर्व १०।८।१२

अर्थात् अन्तरहित ब्रह्म सर्वत्र फैला हुआ है अनन्त और अन्तवाला इन दोनों को अलग-अलग करता हुआ और इसके भूत और भविष्य को जानने वाला सुख का पालनकर्त्ता होकर सर्वत्र विचरण करता है।

उपर्युक्त मंत्रों से स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर सर्वत्र अर्थात् असंख्य ब्रह्माण्डों में सर्वव्यापक हैं सभी प्राणियों तथा वनस्पतियों या कहें सम्पूर्ण जड-चेतन का नियामक, पालक तथा परिवर्तन कर नवीन सृष्टि को नित्य सृजन करता है। वह परमात्मा सर्वव्याप्त होकर सभी ग्रह-उपग्रह को अनुशासन में रख कर उसके चाल का निर्धारण करता है जिससे सभी अपनी कक्षा में रहकर सूर्य की परिक्रमा करते हैं।

ईश्वर सर्वज्ञ हैं :-

सर्वं तद्राजा वरुनो विचष्टे यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात्।

संख्याता अस्य निमिषो जनानां अक्षानिव श्वघ्नी निमिनोति तानि।।

(अथर्व० ४।१६।५)

अर्थात् द्युलोक और पृथ्वीलोक के बीच में जो कुछ है और जो कुछ उससे परे है संसार का स्वामी परमात्मा सबको देखता है। लोगों का पलक झपकना उसका गिना हुआ है, जैसे खेलने वाला अपने पासों को गिनता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर एक-एक परमाणु की गति, कार्य को सूक्ष्म रूप से देखता है कोई भी वस्तु उससे अछूती नहीं रहती वह सबका नियंत्रक और दृष्टा है। वेद में कहा भी है —

सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपाद। यजु ३१।१

उस ईश्वर के असंख्यशिर हैं, असंख्य आँख है और असंख्य पग हैं।

वह सर्वज्ञ है, सबके अन्दर-बाहर सबका उसे ज्ञान है वह सभी स्थूल भूत तथा सूक्ष्मभूत की गतिविधियों का नियामक और ज्ञाता है ।

सांख्य दर्शन में भी कहा गया है — **स हि सर्ववित् सर्व कर्त्ता ।** अ० ३।५६

अर्थात् वह ब्रह्म सर्वज्ञ और सर्वकर्त्ता यानी सृष्टिकर्त्ता है ।

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि परमात्मा सर्वज्ञ है ।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् है :-

यः प्राणतो निमिषतो महित्वेक इद्राजा जगतो वभूव ।

य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषाविधेम ।। ऋक्० १०।१२१।३

अर्थात् जो अपने सामर्थ्य से प्राणवान अर्थात् श्वास लेने वाले और आँख को पलक झपकने वाले इस सम्पूर्ण जगत का एकमात्र स्वामी है । जो सम्पूर्ण दो पैर वाले मनुष्यादि एवम् चार पैरों वाले पशु आदि प्राणियों का स्वामी है, उस सुखस्वरूप परमेश्वर की हम श्रद्धा और विशेष भक्ति से उपासना करें । वही परमात्मा समग्र सृष्टि का निर्माता, पालक एवं रक्षक है ।

कुछ लोगों ने यह धारणा बना लिया है वेद में अनेक ईश्वरों का वर्णन है । परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' में प्रथम समुल्लास में स्पष्ट व्याख्या किया है कि परमात्मा एक है उसके अनेक नाम है । जैसे — अग्नि, मित्र, वरुण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र आदि । वेद में स्पष्ट लिखा है — एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति । वह ईश्वर एक है जो सत्य है । विद्वान् लोग उसको अनेक नामों से पुकारते हैं। वेद में एकेश्वरवाद की पुष्टि की गई है और बहुदेवतावाद को स्पष्ट नकार दिया गया है । वेदों में वर्णित ईश्वर तथा अन्य धर्मों व पन्थों में वर्णित ईश्वर में एक बहुत बड़ा अन्तर है । वेदों में ईश्वर से हमारा सीधा सम्बंध है ईश्वर तक पहुँचने के लिए स्वयं ईश्वर का कृपापात्र बनने के लिए किसी अन्य माध्यम की आवश्यकता नहीं है ।

वेदों के मान्यतानुसार मानव जीवन का परम उद्देश्य मोक्ष तक पहुंचने के लिए परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम पर अंधविश्वास नहीं करना होता । यजुर्वेद का मंत्र इन बातों को स्पष्ट करके मनुष्य समुदाय को आदेश, संदेश तथा निर्देश देता है । यहाँ प्रस्तुत है ।

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात् ।

तमेव विदित्वा अति मृत्युमेति नान्या पंथा विद्यते अयनाय ।। यजु० ३१।१८

महर्षि दयानन्द जी यजुर्वेद भाष्य में इसका अर्थ कर कहते हैं —

भावार्थ — सूर्य के समान प्रकाश-पुञ्ज, सर्वरक्षक उस पुरुष (ईश्वर) को यदि मनुष्य इस लोक और परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सर्वश्रेष्ठ आनन्दस्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक परमात्मा को जानकर ही भक्त मृत्यु को पार करता है । वह दुःख सागर से पृथक हो सकता है, इसके अतिरिक्त मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है । यही सुखदायी मार्ग है ।

उपर्युक्त मंत्र यह भी निराकरण कर देता है कि मनुष्य को ईश्वर तक पहुंचने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं है । वेदों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि असंख्य ब्रह्मांडों में उस परमात्मा का एकक्षत्र राज्य है । उससे बड़ा या बराबर का भी कोई अन्य शक्ति नहीं । अन्य धर्मो, मजहबों में एक

और शक्ति की कल्पना की गई है । इस्लाम और ईसाईयों में ईश्वर का प्रतिद्वन्दी 'शैतान' है, यहाँ उसकी शक्ति गाड या खुदा से कुछ ही कम है । किन्तु वेदों में एकेश्वर का अखण्ड राज्य है कोई प्रतिद्वंदी नहीं है ।

स्पष्ट रूप से हम कह सकते हैं की वेद सृष्टि के साथ प्रारम्भ के हैं, एक ईश्वर के अतिरिक्त कोई दूसरी शक्ति नहीं है । वेद परमात्मा की वाणी है जो नित्य है । उसमें परमात्मा को शुद्ध, पूर्ण तथा सर्वश्रेष्ठ सत्ता के रूप में प्रतिपादित किया है । पौराणिक आदि विचार धाराओं में ईश्वर के अनेक रूप और ईश्वर के प्रतिद्वंदी साथ-साथ पूजा के साधन हैं । पौराणिकों को इस वैज्ञानिक युग में अपने विचारों पर चिन्तन मनन करना होगा और तर्क तथा विज्ञान की कसौटी पर सत्य को ग्रहण करना होगा । जिससे वे अन्य धर्मो द्वारा किये गये आक्षेपों का उत्तर दे सकें । अतः ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान है यही उपासना योग्य है ।

म०न० २४७५ निरालानगर (शिवपुरी)
सुलतानपुर (उ०प्र०)

(पृष्ठ २८ का शेषांश)

वेद प्रचार संवाद

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी, कोलकाता-६ की व्यवस्था में पं० वेदप्रकाश शास्त्री द्वारा आर्य समाज का प्रचार :

१) १८-०७-१७ — आर्य समाज बाकचा, मयना, पूर्व मेदिनीपुर ।

२) १९-०७-१७ — आर्य समाज दक्षिण हरकुलि, पूर्व मेदिनीपुर ।

३) २०-०७-१७ — आर्य समाज कुदी, एगरा, पूर्व मेदिनीपुर ।

४) २१-०७-१७ — गुरुकुल कोलाघाट, पूर्व मेदिनीपुर ।

५) २२-०७-१७ — आमता, हावड़ा में आश्रम के लिए दान में मिलनेवाली १ बीघा जमीन में तीन तल्ला भवन में यज्ञ तथा स्थान की उपयोगिता का परिदर्शन करना ।

६) २८ जुलाई और २९ जुलाई को आर्य समाज डालिमगंज उत्तर दिनाजपुर ।

७) ३०-०७-१७ कालियागंज, उत्तर दिनाजपुर के शहर में वैदिक धर्म का प्रचार स्वरूप एक नई आर्य समाज की स्थापना, जिसके प्रधान श्री और मन्त्री श्री ।

८) ३१ जुलाई २०१७ आर्य समाज बालास, उत्तर दिनाजपुर में वैदिक धर्म का प्रचार ।

९) १ अगस्त से ३ अगस्त २०१७ तक महर्षि दयानन्द गुरुकुल, मालिग्राम ।

१०) ४ अगस्त से ५ अगस्त २०१७ तक आर्य समाज खड़गपुर ।

११) ७ अगस्त से १४ अगस्त २०१७ तक आर्य समाज कलकत्ता में श्रावणी उपाकर्म उपलक्ष्य में यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ में ऋत्विज ।

— प्रेषक

पं० वेदप्रकाश शास्त्रा

—०—

(पृष्ठ २ का शेषांश)

तिवारी, आर्य समाज कलकत्ता के पूर्व प्रधान श्री मनीराम आर्य एवं आदरणीय विद्वान् आचार्य पं० देशराज जी ने योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन, कृतित्व तथा समाज एवं राष्ट्र के प्रति उनके अवदानों पर अपने-अपने विचार प्रकट किए।

आर्य समाज कलकत्ता द्वारा सं[illegible]नत 'रघुमल आर्य विद्यालय' द्वारा प्राप्त समाचार

बोरो-४ का युवा [illegible] दिनांक ३०-०८-२०१७ को रघुमल आर्य विद्यालय में सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में आ[illegible] विद्यालय के लगभग १६० छात्र और छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का शुभारम्भ रघुमल आर्य विद्यालय के सचिव श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा किया गया। शिक्षा जगत से जुड़े हुये श्रीमती लता मजुमदार (ए.आई.), श्री संदीप सेन, श्रीमती रूपा मजुमदार (प्रधान सम्पादिका शुकतारा), आर्य समाज के मंत्री श्री दीपक आर्य, विधान शिशु उद्यान के श्री नाइमुल हक, श्री श्यामकृष्ण मंडल (एस.आई.), श्री अरूप कुमार पाल, रघुमल आर्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री राजीव सरकार और अन्य कई विद्यालय के प्रधानाध्यापक, शिक्षक, शिक्षिकाएँ उपस्थित थे।

युवा संसद प्रतियोगिता में रघुमल आर्य विद्यालय के छात्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कमला शिक्षा सदन के छात्र ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में सबसे उत्तम Script का पुरस्कार रघुमल आर्य विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती नीतु कुमारी यादव को मिला। इसके अलावा बेस्ट स्पीकर रौशन कुमार साव (रघुमल आर्य विद्यालय), बेस्ट सचिव अनूप पाण्डेय, बेस्ट सी.एम./पी.एम. उदय मण्डल (कमला शिक्षा सदन), बेस्ट विरोधी लीडर वरूण रंगा (श्री डिडू माहेश्वरी पंचायत विद्यालय) बेस्ट सांसद प्रथम रोहन गुप्ता (रघुमल आर्य विद्यालय), द्वितीय अंकित पाण्डेय (कमला शिक्षा सदन) रहे। युवा संसद प्रश्नोत्तरी में श्री डिडू माहेश्वरी पंचायत विद्यालय के अजित कुमार बारी और प्रकाश तिवारी प्रथम एवं रघुमल आर्य विद्यालय के विकाश साव और राकेश तिवारी द्वितीय स्थान अर्जित किये। चरित्र निर्माण प्रश्नोत्तरी में श्री डिडू माहेश्वरी पंचायत विद्यालय के आदित्य ओझा और यश कुमार सिंह प्रथम एवं रघुमल आर्य विद्यालय के शिवम् जायसवाल और सोमनाथ प्रसाद द्वितीय रहे। Extempore विभाग में रघुमल आर्य विद्यालय का छात्र विनय कुमार दास ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री डिडू माहेश्वरी पंचायत विद्यालय के चंदन कुमार और कमला शिक्षा सदन के मनीष तिवारी क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान में रहे।

युवा संसद प्रतियोगिता के अगले चरण में रघुमल आर्य विद्यालय के छात्र प्रविष्ट हुए। प्रथम स्थान पाने वाले रघुमल आर्य विद्यालय के छात्र के नाम है — रौशन कुमार साव, शानु हलवाई, बादल माहुरी, चंद कुमार सिंह, रोहन गुप्ता, पवन गुप्ता, रितेश सिंह, अभिषेक कुमार सिंह, राहुल राम बड़ोई, सचिन सिंह, यश अग्रवाल, शशी प्रसाद, गुड्डू दास, विकास राय और सूरज गुप्ता।

राजीव सरकार

शिक्षक प्रभारी, रघुमल आर्य विद्यालय

(शेष पृष्ठ २७ पर)

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए **श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल** द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित।